

Sl.No. :

| नामांक |  |  | Roll No. |  |  |  |
|--------|--|--|----------|--|--|--|
|        |  |  |          |  |  |  |

No. of Sections – 3

SS-32-SH. HD. (Hindi)

No. of Printed Pages – 07

यहाँ से काटिए

**उच्च माध्यमिक परीक्षा, 2019**  
**SENIOR SECONDARY EXAMINATION, 2019**  
**हिन्दी शीघ्रलिपि**  
**(SHORTHAND HINDI)**

समय : 3¼ घण्टे

पूर्णांक : 40

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश :

ClassResult.in

- 1) परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें ।
- 2) तीनों खण्ड एक ही बैठक में लिखाये जायें ।
- 3) प्रथम एवं द्वितीय खण्डों तथा द्वितीय एवं तृतीय खण्डों के बीच में 5-5 मिनट का मध्यान्तर दिया जाये । तीनों खण्डों के संकेत लिपि श्रुतलेखों के हिन्दी अक्षरीकरण के लिए 2¾ घंटे का समय दिया जाए ।
- 4) केवल निम्न विराम-चिह्न ही लगाएं :  
पूर्ण विराम, अर्द्ध-विराम और प्रश्न-चिह्न एवं कोष्ठक ।
- 5) संकेत लिपि पेन्सिल से लिखा जाए तथा उसका अनुवाद हिन्दी में टंकण यंत्र / कम्प्यूटर से ही टंकित किया जाय । हाथ से लिखा मान्य नहीं होगा ।
- 6) संकेत लिपि में लिखा हुआ श्रुतलेख उत्तर-पुस्तिका के साथ नत्थी कर दिया जाए ।
- 7) संकेत लिपि के 20% अंक रखे गये हैं ।
- 8) खण्ड प्रथम 4 मिनट, खण्ड द्वितीय 5 मिनट तथा खण्ड तृतीय 7 मिनट लिखवाने के रखे गए हैं । प्रत्येक खण्ड 80 शब्द प्रति मिनट की गति से बोला जाय ।

प्रश्न पत्र को खोलने के लिए यहाँ फाड़ें

यहाँ से काटिए

प्रथम-खण्ड

(इसे 80 शब्द प्रति मिनट की गति से लिखा जाए)

रतनलाल मदनलाल कम्पनी

[10]

(कपड़े के थोक व्यापारी एवम् कमीशन एजेंट)

पत्र क्रमांक : 998

कनाट प्लेस,

फोन नं./:0897605219

चर्च गेट,

[1/4]

न्यू देहली-6

सेवा में,

सर्व श्री मार्कण्ड क्लॉथ मिल्स,

हवा सड़क, इण्डस्ट्रीयल/एरिया,

पानीपत (हरियाणा)

[1/2]

ईमेल: रतन @ जीमेल.कॉम

विषय:- आर्थिक स्थिति की पूछताछ के क्रम/में

[3/4]

प्रिय महोदय,

आपका पत्र संख्या - एन/ 15-773 दिनांक 10.02.19 का प्राप्त हुआ// इसके लिये धन्यवाद।  
आपने हमारे ही शहर के सर्वश्री राधाचन्द कृष्णचन्द गोटेवाला, कपड़े के थोक व्यापारी, कपड़ा/  
मार्केट नई दिल्ली की आर्थिक स्थिति के बारे में हमसे जानकारी प्राप्त करनी चाही है।

[1]

[1 1/4]

इस संबंध में हमारा/ आपसे निवेदन है कि उक्त फर्म अपने शहर में पिछले 15 वर्षों से स्थापित  
है। हमारा इस फर्म से / पिछले 10-12 वर्षों से मधुर संबंध हैं। यह फर्म शहर के प्रतिष्ठित फर्मों  
में से है।//

[1 1/2]

[1 3/4]

[2]

इस फर्म द्वारा भुगतान प्राप्त करने में कभी भी परेशानी का सामना नहीं करना पड़ा है। इस फर्म  
द्वारा/ दिये गये चैक कभी भी अप्रतिष्ठित नहीं हुए हैं। ये नकद एवम् अग्रिम भुगतान करके सदैव  
नकद छूट प्राप्त/ करने में विश्वास रखते हैं।

[2 1/4]

[2 1/2]

हमारे मतानुसार आप इस फर्म को नकद के साथ उधार माल का अनुबंध भी/ कर सकते है। [2¾]  
आपके द्वारा नकद एवम् उधार अनुबंध करने पर हमारा कोई भी दायित्व नहीं होगा।

हमें// आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि हमारे द्वारा प्रदत्त की गई सूचना आप अत्यन्त ही [3]  
गोपनीय रखेंगे। यदि/आप उचित समझें तो उक्त फर्म की जानकारी यहां स्थित बैंक एस.बी.आई. बैंक, [3¼]  
राणी सती नगर,/ न्यू देहली-शाखा से भी प्राप्त कर सकते है, जिससे आप पूर्णरूप से सन्तुष्टि प्राप्त कर [3½]  
सकें।/ [3¾]

सधन्यवाद।

भवदीय,

दिनांक : 18 फरवरी, 2019

अजय कुमार,

रतनलाल मदनलाल कम्पनी के लिये,

साझेदार//

[4]

ClassResult.in  
द्वितीय-खण्ड

(इसे 80 शब्द प्रति मिनिट की गति से लिखा जाए)

जयपुर नगर,

[10]

प्रदूषण विरोधी समिति,

जे.डी. ए. सर्किल,

जयपुर-2

दिनांक: 10 फरवरी, /2019

[¼]

सेवा में,

श्रीमान् संपादक,

नव उजाला टाइम्स,

जयपुर-2

विषय: जन जीवन के स्वास्थ्य पर/

[1/2]

बढ़ता हुआ बुरा प्रभाव।

मान्यवर,

मैं आपके लोक प्रिय समाचार पत्र के माध्यम से जनता, अधिकारियों तथा/सरकार का ध्यान [3/4]  
नगर में कल कारखानों के कारण होने वाले प्रदूषण की ओर आकर्षित कराना चाहता हूँ। कृपया//मेरा [1]  
यह पत्र अपने समाचार पत्र में प्रकाशित करके अनुग्रहीत करें।

आज के वैज्ञानिक युग में उद्योग-धंधों/ का प्रसार हो रहा है। इन उद्योगों की चिमनियों से [1 1/4]  
निकलने वाले धुएँ से, वायुमण्डल में बहुत प्रदूषण/हो रहा है। इस धुएँ के साथ-साथ औद्योगिक केन्द्रों [1 1/2]  
के फैक्ट्रियों और मशीनों से निकलने वाले कचरे/ एवम् गन्दे पानी से भी वायुमण्डल दूषित हो रहा है। [1 3/4]

प्रदूषण चाहे धुएँ से हो या कचरे से, // प्रत्येक कारण स्वास्थ्य के लिये घातक सिद्ध होता है। यह [2]  
अत्यन्त गंभीर शोचनीय विषय है। वातावरण में शुद्ध/वायु की कमी होती जा रही है, तथा बदबू फैलती [2 1/4]  
जा रही है। इस प्रदूषित वायु का सेवन करने / से भिन्न-भिन्न प्रकार के रोग उत्पन्न होने लगे हैं। [2 1/2]

जयपुर नगर के चारों ओर अनेक उद्योग/धन्धे स्थित हैं। उनकी चिमनियों से निकलने वाले धुएँ [2 3/4]  
तथा कोयले की राख से यहाँ के निवासियों के स्वास्थ्य// पर बहुत बुरा असर हो रहा है। [3]

मेरी सरकार से अपील है कि वह इस प्रदूषण को रोकने के/ लिये अति- आवश्यक कदम उठाये। [3 1/4]  
सरकार को नगर के जन- जीवन के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव/ पर गंभीरता से विचार करना [3 1/2]  
चाहिये।

आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सरकार इस समस्या का समाधान करने/ के लिये समुचित [3 3/4]  
एवम् शीघ्र कदम उठाएगी।

इस पत्र की एक-एक कॉपी जयपुर शहर में प्रकाशित अन्य// अखबारों के संपादकों को भी [4]  
प्रेषित की जा रही है-

- 1) संपादक- जागरण समाचार पत्र, शास्त्रीनगर/ जयपुर-2 [4¼]
- 2) संपादक- नव युवक पत्रिका, वी.टी. रोड, जयपुर-2
- 3) संपादक/ सांध्यकालीन उजाला पत्र, वैशाली नगर, जयपुर-2 [4½]
- 4) संपादक- मॉर्निंग न्यूज पत्र, मालवीय/ नगर, जयपुर-1 [4¾]

भवदीय,

मधुसूदन दयाल शर्मा,

जयपुर नगर प्रदूषण विरोधी

समिती,

ClassResult.in [5]

प्रबन्धक।//

### तृतीय खण्ड

(इसे 80 शब्द प्रति मिनट की गति से लिखा जाए) [20]

#### राष्ट्र का स्वरूप

भूमि, भूमि पर बसने वाला जन और जन की संस्कृति, इन तीनों के सम्मिलन से/ राष्ट्र का स्वरूप बनता है। [1¼]

भूमि का निर्माण देवप्रकृति ने किया है, वह अनन्त काल से है।/ उसके भौतिक रूप, सौन्दर्य और समृद्धि के प्रति सचेत होना हमारा आवश्यक कर्तव्य है। भूमि के पार्थिव स्वरूप / के प्रति हम जितने [1½]

अधिक जागृत होंगे उतनी ही हमारी राष्ट्रीयता बलवती हो सकेगी। यह पृथ्वी सच्चे अर्थों में// समस्त [1]

राष्ट्रीय विचार धाराओं की जननी है। जो राष्ट्रीयता पृथ्वी के साथ नहीं जुड़ी वह निर्मूल है। राष्ट्रीयता की/ [1¼]

जड़ें पृथ्वी में जितनी गहरी होंगी उतना ही राष्ट्रीयभावों का अंकुर पल्लवित होगा। इसलिये पृथ्वी के

भौतिक स्वरूप की/ आद्योपान्त जानकारी प्राप्त करना उसकी सुन्दरता, उपयोगिता और महिमा को [1½]  
पहचानना आवश्यक है।

इस कर्त्तव्य की पूर्ति सैकड़ों/ हजारों प्रकार से होनी चाहिये। पृथ्वी से जिस वस्तु का संबंध है, [1¾]  
चाहे वह छोटी हो या // बड़ी, उसकी कुशल- प्रश्न पूछने के लिये हमें कमर कसनी चाहिये। पृथ्वी का [2]  
सांगोपांग अध्ययन जागरणशील राष्ट्र/ के लिये बहुत ही आनन्दप्रिय कर्त्तव्य माना जाता है। गांवों और [2¼]  
नगरों में सैकड़ों केन्द्रों से इस प्रकार के/ अध्ययन का सूत्रपात होना आवश्यक है। [2½]

धरती माता की कोख में जो अमूल्य निधियां भरी हैं, जिनके कारण/ वह वसुन्धरा कहलाती है [2¾]  
उससे कौन परिचित नहीं होना चाहेगा? दिन-रात बहने वाली नदियों ने पहाड़ों की// पीस-पीस कर [3]  
अगणित प्रकार की मिट्टियों से पृथ्वी की देह को सजाया है। हमारे भावी आर्थिक  
अभ्युदय / के लिये इन सबकी जांच-पड़ताल अत्यन्त आवश्यक है। पृथ्वी की गोद में जन्म लेने वाले [3¼]  
खड़ पत्थर/ कुशल शिल्पियों से संवारे जाने पर अत्यन्त सौन्दर्य का प्रतीक बन जाते हैं। नाना भाँति के [3½]  
अनगढ़ नग विंध्य की/ नदियों के प्रवाह में सूर्य की धूप से चिलकते रहते हैं, उन चीलवटों को जब चतुर [3¾]  
कारीगर पहलदार कटाव// पर लाते हैं तब उनके प्रत्येक घाट से नई शोभा और सुन्दरता फूट पड़ती है। [4]  
देश के नर/ नारियों के रूपमण्डल और सौन्दर्यप्रधान में इन पत्थरों का भी सदा भाग रहा है, अतएव हमें [4¼]  
इनका भी ज्ञान / होना आवश्यक है। [4½]

पृथ्वी और आकाश के अन्तराल में जो कुछ सामग्री भरी है, पृथ्वी के चारों ओर/ फैले हुए गम्भीर [4¾]  
सागर में जो जलचर एवम् रत्नों की राशियां हैं, उन सबके प्रति चेतना और स्वागत के// नये भाव राष्ट्र में [5]  
फैलने चाहिये। राष्ट्र के नवयुवकों के हृदय में उन सबके प्रति जिज्ञासा की नई किरणें/ जबतक नहीं [5¼]  
फूटतीं तब तक हम सोये हुए के समान हैं।

यह भाव जब सशक्त रूप में जागता/ है तब राष्ट्र निर्माण के स्वर वायुमण्डल में भरने लगते हैं। [5½]  
 जहाँ यह भाव नहीं है वहाँ जन और/ भूमि का संबंध अचेतन और जड़ बना रहता है। जिस समय भी जन [5¾]  
 का हृदय भूमि के साथ माता// और पुत्र के संबंध को पहचानता है उसी क्षण आनन्द और श्रद्धा से भरा [6]  
 हुआ उसका प्रणामभाव मातृभूमि के लिये/ प्रकट होता है। [6¼]

इतिहास के अनेक उतार- चढ़ाव पार करने के बाद भी राष्ट्रनिवासी जन नई उठती/ लहरों से आगे [6½]  
 बढ़ने के लिये आज भी अजर-अमर हैं। जन का सततवाही जीवन नदी के प्रवाह/ की तरह कर्म और [6¾]  
 श्रम के उत्थान के अनेक घाटों का निर्माण करना परम आवश्यक सा प्रतीत होता है// [7]



# ClassResult.in

**DO NOT WRITE ANYTHING HERE**

ClassResult.in